18. भारत की प्राकृतिक वनस्पतियाँ एवं वन

उष्णकटिबंधीय सदाहरित वन

- ये वन 200 सेमी. से अधिक वर्षा के क्षेत्रों में मिलते हैं। मुख्य प्रदेश सहयाद्रि (पश्चिमी घाट), शिलांग पठार, अंडमान निकोबार द्वीप समूह और लक्षद्वीप हैं।
- विषुवतीय वनों की तरह ही इन वनों की लकड़ियाँ कड़ी होती है एवं वृक्षों की अनेक प्रजातियाँ मिलती है।
- पेड़ों की ऊँचाई 60 मीटर से भी अधिक मिलती है।
- यहाँ पाए जानेवाले प्रमुख पेड़ महोगनी, आबनूस, जारूल, बांस, बेंत, सिनकोना और रबर है।
- ये वन मसालों के बगान के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- रबर और सिनकोना दक्षिणी सहयाद्रि और अंडमान-निकोबार में मिलते हैं।
- अंडमान-निकोबार का 95% भाग इन्हीं वनों से ढँका है।

उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वन-

- यह 100 से 200 सेमी. वर्षा क्षेत्र में मिलती हैं।
- सहयाद्रि के पूर्वी ढलान, प्रायद्वीप के उ.पू. पठारों, शिवालिक श्रेणी के सहारे भाबर व तराई क्षेत्र हैं।
- ये विशिष्ट मानसूनी वन हैं।
- यहां के प्रमुख पेड़ सागवान, सखुआ, शीशम, आम, महुआ, बांस, खैर, त्रिफला व चंदन हैं।
- ये सभी आर्थिक दृष्टिकोण से मूल्यवान हैं।
- सागवान, सखुआ व शीशम के लकड़ियाँ फर्नीचर बनाने में काम आती है।
- रेल के स्लीपर बनाने में सखुआ लकड़ी का प्रयोग किया जाता है।

उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन-

- ये वनस्पतियाँ 70 से 100 सेमी. वर्षा क्षेत्र में मिलती हैं।
- यहां ऊँचे पेड़ों का अभाव मिलता है।
- शुष्क सीमान्त पर ये वन कंटीले वनों और झाड़ियों में बदल जाते हैं।
- अत्यधिक चराई यहाँ पर मुख्य समस्या है।

कंटीले वन व झाड़ियाँ (मरुस्थलीय वन)-

- गुजरात से लेकर राजस्थान व पंजाब के उन भागों में ये वन मिलती हैं जहां वर्षा 70 सेमी. वार्षिक से कम होती है।
- मध्यप्रदेश के इंदौर से आंध्रप्रदेश के कुर्नूल तक से पठार के मध्यभाग में अर्द्धचन्द्राकार पेटी में मिलते हैं।
- प्रमुख वनस्पतियाँ बूबल, खैर, खजूर, नागफनी, कैक्टस आदि हैं।

पर्वतीय वन-

- चूंकि ऊँचाई बढ़ने पर जलवायुविक परिवर्तन आते हैं इसीलिए वनस्पतियों के स्वरूप में पर्वतीय भागों में क्रमिक परिवर्तन दिखते हैं।
- यहाँ ऊँचाई के क्रम के अनुसार उष्णकटिंबधीय से लेकर अल्पाइन वनस्पति तक मिलती है।
- 1500 मी. तक की ऊँचाई तक पर्णपाती वन मिलते हैं।
- 1500 से 3500 मी. की ऊँचाई तक कोणधारी सदाहरित वन मिलती हैं जिनके वृक्षों की लकड़ियाँ मुलायम होती हैं।
- यहाँ देवदार, स्प्रूर, सिल्वर फर, चीड़ आदि के छोटी व सूच्याकार पत्तियाँ वाले वन मिलते हैं।
- पूर्वी हिमालय के अधिक वर्षा के क्षेत्रों में ओक, मैग्नेलिया व लॉरेल के चौड़ी पत्तीवाले सदाहरित वन मिलते हैं।
- अल्पाइन वनस्पतियाँ 2800 मी. से 4800 मी. की ऊँचाई तक मिलते हैं। प्रारम्भ में चिनार व अखरोट के पेड़ एवं अल्पाइन चारागाह है,
- अधिक ऊँचाई पर कोई वनस्पति नहीं दृष्टिगोचर होती है।

ज्वारीय वन-

- ये वन मुख्यत: उन भागों में मिलते हैं जहां निदयों का ताजा जल समुद्री जल से मिलता है एवं परिणामस्वरूप दलदली भाग बन जाता है।
- गंगा, गोदावरी, कृष्णा आदि के निम्न डेल्टाई भाग इन वनस्पतियाँ के आदर्श उत्पत्ति क्षेत्र है।
- यहाँ प्रमुख वनस्पतियाँ मैंग्रोव, सुन्दरी, कैजुरीना, केवड़ा बेंदी के वृक्ष हैं।
- ज्वारीय वन समुद्री कटाव को रोकते हैं एवं
- इनकी लकड़ियाँ जल में सड़ती नहीं है। ये भी एक प्रकार के उच्च जैव विविधता युक्त सदाहरित वन ही हैं।

घासें -

- भारत में 60 प्रजातियों की घासें पायी जाती हैं।
- बांस सबसे लंबी घास है। इसका हस्त शिल्प उद्योग में मुख्य उपयोग है।